गोस्वामी तुलसीदास

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» गोस्वामी तुलसीदास: परिचय और रचनाएँ

प्रश्न 1 (आसान). तुलसीदास जी की सबसे प्रसिद्ध रचना का नाम क्या है?
उत्तर – रामचरितमानस

प्रश्न 2 (आसान). तुलसीदास जी का निधन किस शहर में हुआ था?
उत्तर – काशी

प्रश्न 3 (मध्यम). तुलसीदास जी की किन्हीं तीन प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
उत्तर – रामचरितमानस, विनयपत्रिका, गीतावली

प्रश्न 4 (कठिन). तुलसीदास जी के जन्मस्थान और निधन के स्थान में क्या अंतर है?
उत्तर – उनका जन्म राजापुर (बाँदा) में हुआ था, जबकि निधन काशी में हुआ।

» तुलसीदास की काव्य-दृष्टि और लोकमंगल की भावना

प्रश्न 5 (आसान). तुलसीदास जी की भक्ति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – लोकमंगल, यानी लोगों की भलाई और समाज में सुधार।

प्रश्न 6 (आसान). तुलसीदास ने किन दो भाषाओं का प्रयोग किया, जो लोकभाषाएँ थीं?
उत्तर – अवधी और ब्रजभाषा।

प्रश्न 7 (मध्यम). शास्त्र और लोक के समन्वय से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – इसका मतलब है कि तुलसीदास जी ने शास्त्रों की मर्यादा और ज्ञान को लोकजीवन की सरल भाषा और कहानियों के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया, ताकि आम लोग भी उसे समझ सकें और अपना सकें।

प्रश्न 8 (कठिन). तुलसीदास जी को विद्वानों और जनसामान्य दोनों में समान रूप से लोकप्रिय बनाने वाला प्रमुख तत्व क्या था?
उत्तर – उनकी समन्वयवादी दृष्टि - जिसमें उन्होंने शास्त्रीयता को लोकग्राह्य और लोकगृहीत को शास्त्रीय बनाया, तथा दार्शनिक और लौकिक द्वंद्वों का चित्राण कर उनका समन्वय किया, जिससे हर वर्ग अपनी उपस्थिति महसूस करता था।

» तुलसीदास का 'जातीय कवि' स्वरूप और काव्यगत विशेषताएँ

प्रश्न 9 (आसान). तुलसीदास ने किन दो प्रमुख काव्य भाषाओं का प्रयोग किया?
उत्तर – अवधी और ब्रजभाषा

प्रश्न 10 (आसान). 'जातीय कवि' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर – वह कवि जो अपने पूरे जनसमूह की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करे।

प्रश्न 11 (मध्यम). तुलसीदास की काव्यगत विशेषताओं में अलंकारों के प्रयोग के संदर्भ में किस बात की चर्चा की गई है?
उत्तर – उपमा और सांगरूपक अलंकारों का विशेष और अद्वितीय प्रयोग।

प्रश्न 12 (कठिन). तुलसीदास को 'जातीय कवि' क्यों कहा जाता है? विस्तार से समझाएँ।
उत्तर – तुलसीदास को 'जातीय कवि' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अपने समय के पूरे हिंदी भाषी क्षेत्र की भावनाओं, विचारों और काव्यभाषायी तत्वों का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने अवधी व ब्रजभाषा दोनों का प्रयोग कर जन-जन तक अपनी बात पहुंचाई और तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को भी अपनी कविता का विषय बनाया, जिससे उनकी रचनाएँ पूरे समाज से जुड़ीं।

» कवितावली (उत्तर कांड) के छंदों का भावार्थ और समकालीन प्रासंगिकता

प्रश्न 13 (आसान). तुलसीदास जी ने गरीबी की तुलना किससे की है 'खेती न किसान' छंद में?
उत्तर – दशानन (रावण)

प्रश्न 14 (आसान). पहले छंद में 'घनश्याम' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर – बादल

प्रश्न 15 (मध्यम). तीसरे छंद 'धूत कहौ...' में तुलसीदास जी किस बात का तिरस्कार करते हैं?
उत्तर – जात-पात और धर्म के आधार पर होने वाले भेदभाव का।

प्रश्न 16 (कठिन). कवितावली के छंदों की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
उत्तर – तुलसीदास जी ने गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याओं का वर्णन किया है, जो आज भी समाज में मौजूद हैं। उनकी राम भक्ति संकटों का समाधान और आत्मबल प्रदान करती है, जो वर्तमान समय में भी लोगों को प्रेरित कर सकती है।

» लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप: मानवीय संवेदना का चित्रण

प्रश्न 17 (आसान). लक्ष्मण-मूर्च्छा के समय राम किस बात का दुख प्रकट कर रहे थे?
उत्तर – राम इस बात का दुख प्रकट कर रहे थे कि उन्होंने सीता के लिए अपने प्यारे भाई लक्ष्मण को खो दिया।

प्रश्न 18 (आसान). प्रसंग में करुण रस के बीच किस रस का उदय होता है?
उत्तर – करुण रस के बीच वीर रस का उदय होता है।

प्रश्न 19 (मध्यम). तुलसीदास जी ने राम के विलाप को 'मनुज अनुसारी' क्यों कहा है?
उत्तर – उन्होंने राम के विलाप को 'मनुज अनुसारी' इसलिए कहा है, क्योंकि वे राम को एक आम इंसान की तरह दुखी होते हुए दिखाना चाहते थे, जो अपने भाई के बिछड़ने के गम में सामान्य मनुष्य की तरह ही विलाप करता है।

प्रश्न 20 (कठिन). हनुमान के संजीवनी लेकर आने को कवि ने करुण रस के बीच वीर रस का उदय क्यों कहा है? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – जब लक्ष्मण मूर्छित थे और राम विलाप कर रहे थे, तब चारों ओर निराशा और करुणा का माहौल था। सब सोच रहे थे कि अब क्या होगा। ऐसे समय में, जब हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आते हैं और लक्ष्मण ठीक हो जाते हैं, तो यह दुख और निराशा का माहौल अचानक खुशी और उत्साह में बदल जाता है। करुणा (दुख) के इस गहरे सागर के बीच हनुमान का आना और लक्ष्मण को बचा लेना, एक वीरतापूर्ण कार्य था जिसने सभी को आशा दी। इसीलिए कवि ने इसे करुण रस के बीच वीर रस का उदय कहा है, क्योंकि यह क्षण निराशा को आशा में और दुख को विजय में बदल देता है।

» विभिन्न छंदों का परिचय: दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया

प्रश्न 21 (आसान). वह छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – दोहा

प्रश्न 22 (आसान). सोरठा छंद में विषम चरणों (पहले और तीसरे) में कितनी मात्राएँ होती हैं?
उत्तर – 11-11 मात्राएँ

प्रश्न 23 (मध्यम). कवित्त छंद को और किस नाम से जाना जाता है और इसमें कुल कितने वर्ण होते हैं?
उत्तर – कवित्त को मनहरण भी कहते हैं और इसमें 31 वर्ण होते हैं।

प्रश्न 24 (कठिन). दोहा और सोरठा छंद में मुख्य अंतर क्या है? मात्राओं के आधार पर समझाएँ।
उत्तर – दोहा में विषम चरणों (पहले, तीसरे) में 13-13 मात्राएँ और सम चरणों (दूसरे, चौथे) में 11-11 मात्राएँ होती हैं, जबकि सोरठा में इसका ठीक उल्टा होता है - विषम चरणों में 11-11 और सम चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

› सबसे पहले याद करेंगे कि तुलसीदास जी भगवान राम के बड़े भक्त थे।

› उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'रामचरितमानस' है, जिसमें राम की कहानी है।

› राम के 'र' से राजापुर, यानी उनका जन्म राजापुर में हुआ था।

› अगर हम उनकी जन्मतिथि याद करें तो वह 1532 थी।

उत्तर – गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म सन् 1532 में राजापुर (बाँदा, उत्तर प्रदेश) गाँव में हुआ था।

उदाहरण 2. तुलसीदास जी ने संस्कृत छोड़कर लोकभाषा (अवधी और ब्रज) में रचनाएँ क्यों कीं?

› पहला कदम: तुलसीदास जी चाहते थे कि उनकी बातें सिर्फ विद्वानों तक सीमित न रहें, बल्कि आम लोग भी उन्हें समझें।

› दूसरा कदम: संस्कृत उस समय आम जनता की भाषा नहीं थी, वह केवल कुछ पढ़े-लिखे लोगों तक सीमित थी।

› तीसरा कदम: आम लोगों से जुड़ने और अपनी भक्ति तथा लोकमंगल की भावना को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उन्होंने लोकभाषा को चुना।

› चौथा कदम: उनका लक्ष्य था समाज का उद्धार और नैतिकता का प्रसार, और इसके लिए लोकभाषा ही सबसे अच्छा माध्यम थी।

उत्तर – तुलसीदास जी ने अपनी 'लोकोन्मुख' भक्ति (जो लोगों की ओर उन्मुख हो) और 'लोकमंगल' की भावना को जन-जन तक पहुँचाने के लिए लोकभाषा (अवधी और ब्रज) का प्रयोग किया, ताकि उनकी रचनाएँ सिर्फ विद्वानों तक सीमित न रहें, बल्कि आम जनता भी उन्हें पढ़कर लाभ उठा सके।

उदाहरण 3. तुलसीदास जी को 'जातीय कवि' क्यों कहा जाता है, उनकी काव्यगत विशेषताओं के साथ स्पष्ट करें।

› सबसे पहले बताओगे कि 'जातीय कवि' का मतलब क्या है - यह वह कवि है जो अपने समय के पूरे जनसमूह की भावनाओं, विचारों और उनकी भाषाओं को अपनी रचनाओं में स्थान देता है।

› फिर समझाओगे कि तुलसीदास जी ने हिंदी भाषी क्षेत्र की दोनों मुख्य काव्य भाषाओं - अवधी और ब्रज - का प्रयोग किया।

› उनकी कविता में केवल भक्ति ही नहीं, बल्कि उस समय की आर्थिक विषमता, गरीबी, और पेट की आग जैसी समस्याओं का भी चित्रण था, जिससे वे आम जनता के करीब आ गए।

› अलंकारों में उन्होंने उपमा और सांगरूपक का विशेष और अद्भुत प्रयोग किया, जैसे कालिदास उपमा में मशहूर थे, वैसे ही तुलसीदास सांगरूपक में।

› अंत में, उनके 'लोकमंगल' की भावना को जोड़ते हुए कहोगे कि इन सभी विशेषताओं के कारण ही वे हिंदी के 'जातीय कवि' कहलाए।

उत्तर – तुलसीदास जी को 'जातीय कवि' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने पूरे हिंदी क्षेत्र की भावनाओं और काव्य भाषाओं का प्रतिनिधित्व किया। उनकी काव्यगत विशेषताओं में अवधी व ब्रजभाषा का कुशल प्रयोग, तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का चित्रण, और उपमा व सांगरूपक अलंकारों का विशिष्ट प्रयोग शामिल है, जो उनकी रचनाओं को अद्वितीय बनाता है।

उदाहरण 4. कवितावली के छंद 'किसबी किसान' में 'पेट की आग' से तुलसीदास जी का क्या अभिप्राय है और इसका समाधान वे कैसे बताते हैं?

› पहले 'किसबी किसान...' छंद को ध्यान से पढ़ें और उसमें तुलसीदास जी के शब्दों पर गौर करें।

› तुलसीदास जी कहते हैं कि संसार के सभी अच्छे-बुरे कर्मों का मूल कारण 'पेट की आग' है। इसका मतलब है भयंकर गरीबी और भूख। जब पेट खाली होता है, तो इंसान जीने के लिए कुछ भी करने को मजबूर हो जाता है।

› इस 'पेट की आग' को बुझाने के लिए तुलसीदास जी राम-रूपी घनश्याम की कृपा का आह्वान करते हैं। जिस तरह घनश्याम (बादल) वर्षा करके धरती की प्यास बुझाते हैं, उसी तरह राम की भक्ति और कृपा से जीवन के कष्ट और गरीबी दूर होगी।

उत्तर – 'पेट की आग' से तुलसीदास जी का अभिप्राय भयंकर गरीबी, भूख और जीवन जीने के लिए संघर्ष से है। इसका समाधान वे राम की भक्ति और कृपा में देखते हैं, जो जीवन के यथार्थ संकटों को दूर करने वाली है।

उदाहरण 5. लक्ष्मण-मूर्च्छा प्रसंग में राम के विलाप के माध्यम से तुलसीदास जी क्या संदेश देना चाहते हैं?

› सबसे पहले, राम के विलाप के शब्दों को ध्यान से समझो, जैसे: 'सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता। '

› इन शब्दों का अर्थ है कि बेटा, धन, पत्नी, घर-परिवार तो बार-बार मिल जाते हैं, लेकिन सगा भाई दोबारा नहीं मिलता।

› फिर, सोचो राम जो ईश्वर थे, अगर वे ऐसी बात कह रहे हैं, तो वे अपनी भावनाओं को पूरी तरह से मानवीय रूप में व्यक्त कर रहे हैं।

› यह दिखाता है कि तुलसीदास जी राम को सिर्फ शक्तिशाली भगवान के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाना चाहते थे जो दुख, प्रेम और पीड़ा जैसी भावनाओं को महसूस करते हैं।

› अंत में, इससे संदेश मिलता है कि मानवीय रिश्ते, खासकर भाई-बहन के रिश्ते, दुनिया की किसी भी चीज़ से बढ़कर होते हैं, और दुख में भगवान भी मनुष्य की तरह ही व्यवहार करते हैं।

उत्तर – तुलसीदास जी 'लक्ष्मण-मूर्च्छा' प्रसंग में राम के विलाप के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि भ्रातृ प्रेम सभी सांसारिक बंधनों से ऊपर है, और ईश्वर भी मानवीय संवेदनाओं, विशेषकर दुख और प्रेम, को उसी गहराई से महसूस करते हैं जैसे एक साधारण मनुष्य। यह प्रसंग हमें रिश्तों के महत्व और मानवीय भावनाओं की सार्वभौमिकता सिखाता है।

उदाहरण 6. नीचे दी गई पंक्तियाँ किस छंद का उदाहरण हैं और इसकी मात्राएँ गिनकर बताएँ:
'श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि।।'

› पहले चरण की मात्राएँ गिनेंगे: श्री (2) गु (1) रु (1) च (1) रण (1) स (1) रो (2) ज (1) र (1) ज (1) = 13 मात्राएँ।

› दूसरे चरण की मात्राएँ गिनेंगे: नि (1) ज (1) म (1) न (1) मु (1) कु (1) रु (1) सु (1) धा (2) रि (1) = 11 मात्राएँ।

› तीसरे चरण की मात्राएँ गिनेंगे: ब (1) र (1) न (1) ऊँ (2) र (1) घु (1) ब (1) र (1) बि (1) म (1) ल (1) ज (1) सु (1) = 13 मात्राएँ।

› चौथे चरण की मात्राएँ गिनेंगे: जो (2) दा (2) य (1) क (1) फ (1) ल (1) चा (2) रि (1) = 11 मात्राएँ।

› क्योंकि पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ और दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ हैं, इसलिए यह दोहा छंद है।

उत्तर – यह दोहा छंद का उदाहरण है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• तुलसीदास जी के जन्म और निधन की तिथि और स्थान, साथ ही उनकी प्रमुख रचनाएँ – ये बोर्ड परीक्षा में अक्सर 1 या 2 नंबर के प्रश्नों में पूछे जाते हैं। इन्हें अच्छे से याद कर लेना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर प्रश्न पूछा जाता है कि तुलसीदास की काव्य-दृष्टि में 'लोकमंगल' या 'समन्वयवादी दृष्टि' का क्या महत्व है। इसे ध्यान से समझो और उत्तर में उदाहरणों के साथ लिखो।

• बोर्ड परीक्षा में 'तुलसीदास के जातीय कवि स्वरूप' पर अक्सर प्रश्न आते हैं। उनकी भाषा (अवधी, ब्रज) और अलंकार प्रयोग (उपमा, सांगरूपक) को अच्छे से याद रखना, ये महत्वपूर्ण बिंदु हैं।

• छंदों से जुड़े प्रश्नों में मात्राएँ या वर्ण गिनने को ज़रूर आता है। एक-एक मात्रा को बहुत ध्यान से गिनना, खासकर लघु और गुरु वर्णों का अंतर समझना।

एक नज़र में रिवीज़न

› तुलसीदास: जन्म 1532 राजापुर, निधन 1623 काशी; प्रमुख रचना रामचरितमानस।

› तुलसीदास: लोकमंगल, लोकभाषा (अवधी/ब्रज), शास्त्र-लोक समन्वय.
› तुलसीदास: हिंदी के जातीय कवि; अवधी-ब्रजभाषा, उपमा-सांगरूपक का विशिष्ट प्रयोग।
› छंद: दोहा (13-11), सोरठा (11-13), कवित्त (31 वर्ण), सवैया (22-26 वर्ण)।